9. संस्कृतेऽनुवादः कार्यः -

प्राचीन समय में कुरू देश में राजा ऋष्टिषेण के देवापि तथा शान्तनु दो पुत्र थे। देवापि ने ज्येष्ठ होते हुए भी त्वग्रोग से पीड़ित होने के कारण अपने पिता के स्वर्ग चले जाने के बाद अपने छोटे भाई शान्तनु का राज्याभिषेक किया और स्वयं को राज्य के योग्य नहीं समझा। शान्तनु का राज्याभिषेक करके देवापि वन चले गये। इसके बाद 12 वर्ष तक वर्षा नहीं हुई। वर्षा न होने का कारण धर्म व्यतिक्रम था क्योंकि ज्येष्ठ उत्तराधिकारी के होते हुए कनिष्ठ राजपुत्र राजा बना था। शान्तनु प्रजासहित देवापि के पास वन गये तथा उन्हें राज्य देना चाहा। परन्तु देवापि ने शान्तनु को वृष्टियाग करवाने का निर्देश देकर यज्ञपुरोहित बनना स्वीकार किया। देवापि ने यथाविधि शान्तनु द्वारा करवाये गये वृष्टियाग में पुरोहित का कार्य किया। फलतः वृष्टि हुई।

A **(Printed Pages 4)**

Roll No. _____

AS-2147

M.A. (Semester-IV) Examination, 2015

Sanskrit

वर्ग-क-वेद

Paper-V

(निबन्धः अपठितांशः अनुवादश्च)

समयः - घण्टात्रयम् **पूर्णाङ्कः - 100**

निर्देश : **पञ्च** प्रश्नाः समाधेयाः। **प्रथमः प्रश्नोऽनिवार्यः** । प्रतिवर्गमे**कैकस्य** प्रश्नस्योत्तर विधेयम् ।

1. अधोलिखितानां लघुव्याख्या कार्या- 4×5=20

(क) ईशावास्योपनिषदः प्रथमोमन्त्रः।

(ख) ऋग्वेदस्य प्रमुख-विषयः।

(ग) वेदाङ्गानि।

(घ) ब्राह्मणग्रन्थानां परिचयः।

(ङ) स्वाध्यायान्मा प्रमदः।

प्रथमोवर्गः 20

2. 'ऋग्वेदस्य वैशिष्ट्यम्' इति विषयमधिकृत्य संस्कृत भाषायाम् निबन्धो लेख्यः।

3. 'मुखं तु व्याकरणम् स्मृतम्' इति प्रतिपादनीयम् ।

द्वितीयोवर्गः 20

4. निबन्धो विलिख्यताम्
'वेदोऽखिलोधर्ममूलम्'

5. निबन्धो लेख्यः -
'उपनिषदां महत्त्वम्' ।

तृतीयोवर्गः 20

6. हिन्दीभाषायामनुवादो विधेयः -

(क) वेदानां धार्मिक-दृष्ट्यापि महत्वमस्ति। विविधभारतीय सम्प्रदायानां मूलतत्वानि वेदेषु एव निहितानि सन्ति। वेदा विश्वस्य प्राचीनतमा ग्रन्थाः सन्ति। प्राचीन भारतीय संस्कृतिर्सभ्यता च तत्र सुरक्षिता अस्ति। वेदानामध्ययनेनैवेतत् सुस्पष्टं भवति।

(ख) वेदार्थवोधे ब्राह्मणानीवारण्यकान्यपि अतीवसहायकानि, अतएवारण्यकानि रहस्यग्रन्थाः उच्यन्ते। ब्राह्मण'भागस्य पारिशिष्टभागरूपाणि-गद्यपद्यमयानि, वानप्रस्थानामध्ययनाध्यापन स्वाध्यायपराणि, यज्ञ-यागादि विधिविधायकानि शास्त्राणिआरण्यकानि।

7. हिन्दीभाषयाऽनुवादो विधेयः -

(क) अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम्।।
गुरूं वा बालवृद्धं वा ब्राह्मणं वा विपश्चितम्।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयत्।।

(ख) आचारः परमोधर्म श्रुत्युक्तःस्मार्त एवच।
तस्मादस्मिन् सदायुक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः।।
आचाराद्विच्युतो विप्रः न वेद फलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्ण फलभाग् भवेत्।।

चतुर्थोवर्गः 20

8. संस्कृतेनाऽनुवादः कार्यः -

भिन्न-भिन्न मत-मतान्तर के आचार्य वेद मन्त्रों से अपना मार्ग निर्धारित करते हैं। वेद मन्त्रों की व्याख्या से ही ब्राह्मण, आख्यक, उपनिषद् आदि विषयग्रन्थपल्लवित हुए हैं। वेद मन्त्रों के विवरण का प्रथम कार्य महर्षि यास्क के निरूक्त में किया गया है।